B.A Part III
Paper VI

①

प्रवर्तन Innovation (Social Change)

सामाजिक परिवर्तन के एक कारक के रूप में प्रवर्तन (Innovation) शब्द का प्रयोग समाजशास्त्रीय साहित्य में अपेक्षाकृत नया है इससे पहले अधिकतर विद्वान 'अविष्कार' (Invention) तथा 'खोज' Discovery शब्दों का ही प्रयोग करते रहे हैं। परन्तु इनके अर्थ के सम्बन्ध में बहुत मतभेद पाया जाता है। कुछ विद्वान 'अविष्कार' Invention तथा खोज Discovery में कोई अन्तर नहीं देखते, पर कुछ ऐसे समाजशास्त्री भी हैं जो इन्हें एक दूसरे से बिल्कुल पृथक तथा भिन्न समझते हैं। इस लम्बे समय से चले आ रहे मतभेद तथा विवाद के परिणामस्वरूप एक ऐसे व्यापक शब्द की आवश्यकता महसूस की जाने लगी जिसका अर्थ इतना व्यापक हो कि इन दोनों शब्दों Invention एवं Discovery को उसमें सम्मिलित किया जा सके क्योंकि इन दोनों में से कोई भी अकेला शब्द उस प्रक्रिया अथवा तथ्य को पूर्ण रूप से व्यक्त करने में सहायक नहीं हो पा रहा था जिसकी व्याख्या समाजशास्त्री सामाजिक परिवर्तन के एक कारक के रूप में करना चाहते थे

इस कठिनाई को दूर करने का केवल एक उपाय था कि इन दोनों शब्दों के विवाद में पड़े बिना एक नया शब्द प्रयोग में लाया जा सके। 'प्रवर्तन' (Innovation) ही वह शब्द है जिसमें अविष्कार तथा खोज, दोनों के अर्थों का समन्वय हो जाता है।

वैज्ञानिक "अविष्कार" (Invention) तथा 'खोज (Discovery) का एक ही अर्थ लगाने वाले प्रमुख विचारक- आगबर्न, A. L. Kroeber, H. G. Barnett, Bernard Barber.

भिन्न अर्थों में प्रयोग करने वाले विद्वान- E. A. Hoebel, R. T. La Pière, Simon Kuznets एवं आर्थिशास्त्री I. H. Siegel.

प्रवर्तन की परिभाषा तथा अर्थ :-

'प्रवर्तन' एक ऐसा शब्द है जिसमें हम 'अविष्कार' (Invention) तथा खोज Discovery दोनों को सम्मिलित कर सकते हैं।

अविष्कार शब्द का प्रयोग विद्यमान वस्तुओं, अवस्थाओं या कार्य प्रणालियों में होने वाले ऐसे उद्देश्यपूर्ण परिवर्तन अथवा समन्वय से है जिसमें नए प्रारूप की वस्तुएँ अथवा क्रियाएँ उत्पन्न होती हैं जबकि खोज उस क्रिया को कहते हैं जिसके द्वारा पहले से विद्यमान किसी ऐसे तथ्य को प्रकाश में

③

जाना जाता है जिसका पहले हमको ज्ञान नहीं था।

1. "प्रवर्तन" एक व्यापक शब्द है जिसका प्रयोग समाज तथा संस्कृति में किसी भी नवीन तत्व के लिये किया जा सकता है। उसकी नवीनता चाहे ज्ञान में वृद्धि के कारण हो या पहले से विद्यमान अवस्था या वस्तु में किसी परिवर्तन (आविष्कार) के परिणामस्वरूप हो। इस प्रकार प्रवर्तन (Innovation) के अन्दर हम आविष्कार तथा खोज दोनों को सम्मिलित कर सकते हैं। - F.R. Allen.

"..... The term "innovation is assumed to be all-inclusive denoting any new element in society and culture. Thus both inventions and discoveries are subsumed under this heading".

— F.R. Allen: Socio-cultural Dynamics — P. 252.

2. प्रवर्तन

प्रवर्तनों का वर्गीकरण (classification of innovations) :-

सभी प्रवर्तनों का समाज तथा संस्कृति पर समान प्रभाव नहीं पड़ता, कुछ प्रवर्तन सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण को तुरन्त प्रभावित करने लगते हैं, जबकि कुछ प्रवर्तन बहुत लम्बे समय बाद परिवर्तन उत्पन्न करते हैं।

कुछ प्रवर्तनों का प्रभाव समाज तथा संस्कृति के किसी एक पक्ष तक ही सीमित रहता है जबकि कुछ प्रवर्तनों का प्रभाव सम्पूर्ण समाज तथा संस्कृति को सामान्य रूप से प्रभावित करते हैं। कुछ प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं तो कुछ अप्रत्यक्ष रूप से।

1) उपयोगिता की सीमा के आधार पर प्रवर्तनों का वर्गीकरण :- कम्प्यूटर के क्षेत्र में नये प्रवर्तनों के कारण उसकी उपयोगिता बहुत अधिक है नये-नये मोबाइल फोन की उपयोगिता प्रवर्तनों के आधार पर बहुत महत्वपूर्ण है।

2) प्रभाव के सामाजिक सांस्कृतिक महत्व के आधार पर प्रवर्तनों का वर्गीकरण :- Linton ने प्रवर्तनों को दो भाग में बाँटा है। आधारभूत प्रवर्तन Basic innovation तथा सुधारात्मक प्रवर्तन Improving innovation

3) प्रभाव की व्यापकता के आधार पर प्रवर्तनों का वर्गीकरण-